RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER
STENOGRAPHER EXAM 2011
HINDI STENOGRAPHY PAPER (SESSION – 1)

किसी काम को व्यवस्था के साथ किया जाए तो उसमें कोई भी परेशानी नहीं होती। यदि हमारे कामों में व्यवस्था की थोड़ी–सी भी त्रुटि हो जाये, तो हमारे काम बिगड़ जाते हैं और हम उन्नति नहीं कर सकते हैं।

सभी बड़ी–बड़ी संस्थायें नियमानुसार ही चल रही हैं। बिना नियम और अनुशासन के न तो कोई व्यवसाय चल सकता है और न सामाजिक उन्नति ही की जा सकती है। क्या व्यापारी और क्या नेता, सभी को नियमपूर्वक कार्य करने से ही सफलता प्राप्त होती है। व्यवसाय में तो विशेष तौर पर नियम तथा व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। बिना किसी दक्ष प्रबन्धक के, और अनियमितता दूर किए बिना व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर पाना असम्भव है।

किसी भी बड़े कारखाने को देख लीजिए, नियमपूर्वक काम कर पाने से ही वह उन्नत हो सका है। यदि नियम में थोड़ी–सी भी गड़बड़ी हो जाये तो सारा व्यवसाय ही चौपट हो जाये। यही नहीं, कोई भी और कितना ही जटिल व्यवसाय हो, व्यवस्था से ही सुचारू रूप से चल सकता है। कई अव्यवस्थित व्यक्ति यह सोचते हैं कि मुख्य लक्ष्य की ओर देखना ही आवश्यक है। सम्बन्धित बातों की विशेष व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु वास्तविकता यह है कि लक्ष्य से सम्बन्धित छोटी–छोटी बातों की व्यवस्था परमावश्यक है। जो व्यक्ति छोटी–छोटी बातों को ध्यान में नहीं रखता, उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह बड़ी एवं जटिल बातों को सँभाल लेगा ? यदि छोटी–छोटी बातों की ओर ध्यान न दिया जाए तो सारा व्यवसाय ही चौपट हो जाये ।

यदि व्यवस्था न की जाये तो व्यक्तियों का बहुत–सा समय और धन नष्ट हो जाये। उचित व्यवस्था करके ही शक्ति और समय की बचत की जा सकती है। नियम पर चलते रहने से समय और शक्ति दोनों की बचत होती है। नियमित व्यक्ति अपनी वस्तुओं को इधर–उधर नहीं फेंकते, बल्कि एक नियत स्थान पर रखते हैं, जिससे उन्हें ढूँढ़ने में समय या शक्ति नष्ट नहीं करनी पड़ती। इस प्रकार उनकी शक्ति और समय अन्य लाभप्रद कार्यों में लगते हैं।

नियम–पालन करते अर्थात व्यवस्था में रहने से ऐसी बुद्धि स्फुटित होती है, जिसकी सहायता से बड़े–से–बड़े काम बहुत आसानी से हो सकते हैं। व्यवस्था के कारण नियमित व्यक्ति थोड़े समय में इतना अधिक काम कर लेता है कि लोगों को आश्चर्य होने लगता है। व्यवस्थित होने के कारण उसे सफलता–ही–सफलता मिलती जाती है। जबकि अनियमित व्यक्ति असफल ही होता है। अतः यह आवश्यक है कि नियमों का पालन दृढ़तापूर्वक किया जाये । तब उद्देश्य पूर्ण हो सकता है अन्यथा नहीं ।

समाज की उन्नति भी नियम और अनुशासन पर ही आश्रित है। यदि नियमों के क्रम

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER
STENOGRAPHER EXAM 2011
HINDI STENOGRAPHY PAPER (SESSION – 2)

एक समय की बात है; जब हमारे नगर इलाहाबाद को भीषण बाढ़ का सामना करना पड़ा था। उस समय मैं बहुत छोटा था तथा तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मैं स्वयं तो समाचार–पत्र नहीं पढ़ सकता था, किन्तु उन दिनों प्रायः नित्य की चर्चा का विषय बाढ़ ही रहा करता था। जैसे ही समाचार–पत्र वाहक का स्वर सुनाई पड़ता, अखबार ले जाओ, वैसे ही भैया एवं दीदी झपटकर बाहर दौड़ते और अखबार की खींचतान मच जाती। अंत में माताजी अथवा पिताजी उन्हें शांत करते, फिर हम सब अतीव उत्सुकता से बाढ़ की खबरें सुनने बैठ जाते। एक दिन पिताजी ने अति चिंतित होकर हमे समाचार सुनाया कि आगरा और दिल्ली की ओर भारी वर्षा हो रही है, जिससे यमुना नदी में भीषण बाढ़ आ गई है।

उन दिनों इलाहाबाद में भी वर्षा की झड़ी लगी हुई थी और गंगा में भी बाढ़ आने लगी थी। हमारा शहर इलाहाबाद तीन दिशाओं से गंगा और यमुना नदियों से घिरा हुआ था, इसलिए यह पूरी आशंका थी कि हमें भीषण बाढ़ का प्रकोप सहना पड़े। दूसरे दिन ही पिताजी ने हमें समाचार–पत्र में छपी खबर सुनाई, कल तक प्रयाग को भी भीषण बाढ़ का सामना करना पड़ेगा। जिधर देखिए, उधर बाढ़ की चर्चा हो रही थी और सभी लोग भयभीत दिखाई दे रहे थे। तभी बड़े भैया कहीं से घमू–फिरकर लौटे। उन्होंने बताया कि गंगा और यमुना दोनों ही बहुत बढ़ गई हैं और यह सत्य है कि कल–परसों तक ये नदियाँ अपनी सीमा पार करके सड़कों पर भी प्रवाहित होने लगेंगी। हमारा घर जिस मुहल्ले में है, वह गंगा–यमुना के अत्यन्त निकट है। जब भी गंगा–यमुना में बाढ़ आती है तो हमारे मुहल्ले तक बाढ़ का पानी लहराने लगता है और नावें चलने की नौबत आ जाती है। इसलिए मुहल्ले में सनसनी फैल गई और मुहल्लेवाले अपने–अपने सामान सुरक्षित स्थानों में स्थानांतरित करने लगे। पिताजी ने भी तुरंत घर–गृहस्थी का सब सामान अपने एक मित्र के घर पहुँचा देने की व्यवस्था की और फिर हम सब लोग भी उन्हीं के घर चले गए । कुछ व्यक्ति सरकारी शिविरों में और अपने सगे–संबंधियों के घर चले गए,जहाँ बाढ़ आने का खतरा नहीं था।

किसी प्रकार त्रस्त नगरवासियों ने रात व्यतीत की और सवेरा हुआ। आकाश उस समय काले–काले मेघों से आच्छादित था। किन्तु जिधर देखो उधर बादलों की उपेक्षा करके लोग बाढ़ देखने के लिए चल पड़े। हम भी अपने परिवार के साथ गऊघाट पहुँचे। यमुना का पुल अर्थात गऊघाट तक पहुँचने में मार्ग में जितने मुहल्ले मिले, वे सभी जल में डुबे हुए थे । मैं जिस विद्यालय में पढ़ता था वह मुट्ठीगंज में स्थित है। मेरे विद्यालय के सामने वाली सड़क पर, जो यथेष्ट ऊँचाई पर है, भी यमुना का जल ठाठें मार रहा था। यमुना के पुल पर खड़े होकर देखने से ऐसा प्रतीत होता था, मानो जल–प्लावन हो गया

हो । चारों ओर जल–ही–जल दिखाई देता था। यमुना का जल खतरे के बिंदु पर थपेड़े मार रहा था। यमुना का पुल मानव–समूह से खचाखच भरा था। यमुना मैया अपना प्रकोप शांत करें, इसलिए जन–समुदाय प्रार्थना करके उन्हें फूल–माला अर्पित कर रहा था। अपार जल राशि की गर्जना मनुष्य ही नहीं, पशु–पक्षियों के हृद्यों को भी आतंकित कर रही थी। वृक्षों पर भयभीत पक्षी भयावह शोर मचा रहे थे ।

यमुना पार के ग्रामीणों का तो बुरा हाल था। समस्त खेती जल–प्लावित हो गई थी। ग्रामीणजनों के घर, फूस के छप्पर तक यमुना में बहते नजर आ रहे थे। ग्रामीणों के कोठिलों और ड्रमों में भरा अनाज तथा पशुओं के लिए संचित चारा आदि सब घर में पानी भर जाने के कारण नष्ट हो गए थे। यमुना के जल में बहती हुई अगणित मानव और पशु–पक्षियों की लाशें, भँवर के चक्कर में पड़कर डूबती हुई नौकाएँ तथा अपने जीवन की रक्षा हेतु जल से संघर्ष करते त्रस्त व भयभीत व बहते हुए जीवित पशु–पक्षी सम्मिलित रूप में एक ऐसा भयावह दृश्य उपस्थित कर रहे थे कि मेरा बाल–मस्तिष्क आतंकित हो उठा।

मुझे आज भी स्मरण है कि मैं डर के मारे आँखें बंद करके यमुना के पुल पर ही अपनी माँ से लिपट गया था और जोर जोर से रोने लगा था। मुझे अत्यधिक भयभीत देखकर पिताजी सपरिवार घर लौट आए थे। उस रात मैं सो नहीं सका था। आँखें बंद करते हुए भी विनाशकारी भयावह दृश्य चलचित्र की भाँति नृत्य करने लगते थे और मैं डर के मारे आँखें खोल देता था

दूसरे दिन गंगा नदी की बाढ़ देखने के लिए कोई भी नहीं जा सका था। आज भी जब मैं उस विकराल बाढ़ को याद करता हूँ तब भय–मिश्रित आनंद से मेरा रोम–रोम रोमांचित हो उठता है।

बाढ़ तो जैसे आई थी वैसे ही चली भी गई थी, किंतु उसका कितना भारी नुकसान प्रयागवासियों को सहना पड़ा, उसका लेखा–जोखा कौन करे ! न जाने कितनी बड़ी संख्या में जन–धन की हानि हुई।

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER
STENOGRAPHER EXAM 2011
HINDI STENOGRAPHY PAPER (SESSION – 3)

मेट्रिक की परीक्षा पास करने से एक साल पहले पिता की मृत्यु हो जाने से घर की आर्थिक हालत बहुत बिगड़ गई थी । घर में पढ़ाई जारी रखने वाला अकेला वही लड़का था। परिवार को उससे बड़ी उम्मीदें थीं। इसलिए आगे पढ़ाने के लिए उसे पास के शहर के कॉलेज में दाखिल कराया गया। लेकिन वहाँ पढ़ाई अंग्रेजी में होती थी जिसे वह समझ नहीं पाता था। उसे बड़ी निराशा होती, यहाँ तक कि तरक्की और कामयाबी की उम्मीद ही नहीं रह गई।

इसी बीच परिवार के एक मित्र ने सुझाया कि इसको इंगलैण्ड जाकर कानून पढ़ना चाहिए। उन दिनों इंग्लैण्ड से बेरिस्ट्री करना कहीं आसान था। उसकी तुलना में भारत के विश्वविद्यालय से डिग्री हासिल करने में धन, समय और शक्ति तीनों अधिक लगते थे और नौकरी के बाजार में उस डिग्री की उतनी कदर भी नहीं थी। बम्बई की डिग्री हासिल कर लेने पर ज्यादा से ज्यादा क्लर्की मिल सकती थी, और उनका कहना था कि अगर वह अपने दादा और पिता की तरह किसी रियासत का दीवान बनना चाहे तो उसे विदेश के किसी विश्वविद्यालय की डिग्री की जरूरत होगी। उनके पिता और दादा ऊँचे पदों पर थे और उन्होंने थोड़ी–सी शिक्षा से ही अपना काम चला लिया था, मगर अब जमाना बदल गया है। मैकाले की शिक्षा योजना लागू हो चुकी थी। भारतीय विश्वविद्यालय हर साल हजारों की संख्या में कला और कानून के स्नातक तैयार कर रहे थे, ऐसे स्नातकों की तादाद बहुत अधिक हो गई थी। इसलिए विलायत जाकर डिग्री हासिल करना ऊँची नौकरी की होड़ में यकीनन फायदे की बात थी ।

विदेश जाने की बात सुनकर उनका मन खुशी से नाच उठा । कॉलेज के अध्यापकों के लेक्चर उसकी समझ में नहीं आते थे इसलिए दार्शनिकों एवं कवियों के देश और सभ्यता के केन्द्र इंग्लैण्ड को देखने की उत्कंठा के साथ–साथ कॉलेज से छुटकारा पाने की आशा बलवती हो उठी। उसके बड़े भाई को भी यह प्रस्ताव पंसद आया पर उन्हें इस बात की चिन्ता होने लगी कि खर्च के लिए पैसा कहाँ से आएगा? उसकी माता की तो छाती ही बैठ गई। अपने सबसे छोटे और लाडले बेटे को वह समन्दर पार विलायत के अंजाने प्रलोभनों और खतरों के बीच कैसे भेज देती? यह मसला उनके लिए बहुत बड़ा और टेढ़ा था पर इसमें उन्हें अपनी अक्ल चलती दिखाई न दी तो वह सोचने लगी कि काश इसका फैसला करने के लिए आज उनके पिता जीवित होते।अंत में उन्होंने बेटे को काका के पास, जो गाँधी परिवार के बुजुर्ग और कर्ताधर्ता थे, इस मामले में सलाह के लिए भेजा। बैलगाड़ी और ऊँट पर यात्रा करके वह अपने काका से मिलने गया। काका ने आवभगत और स्नेह तो बहुत किया, लेकिन धर्म को भ्रष्ट करने वाली समुद्री यात्रा के लिए इजाजत देने को खुले मन से राजी न हुए। वह राज्य के अंग्रेज हाकिम से वजीफा माँगने गया। गाँधी परिवार ने उस राज्य की बड़ी सेवाएँ की थीं, लेकिन वहाँ भी निराशा ही

हाथ लगी।अंग्रेज अफसर ने नाम मात्र का सौजन्य दिखाते हुए कहा, पहले बम्बई विश्वविद्यालय की डिग्री ले लो, इंग्लैण्ड के लिए वजीफे की बात उसके बाद करना। इस तरह हर कदम पर निराशा का सामना करना पड़ रहा था, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। वह जानता था कि अगर इंग्लैण्ड जाना न मिला तो फिर वहीं लौटना होगा, जो उसे जरा भी पसंद नहीं था। कोई चारा न देख वह पत्नी के गहने तक बेचने की बात सोचने लगा लेकिन जब उदारमना बड़े भाई ने रूपया इकट्ठा कर देने की हामी भर ली तो यह मजबूरी गैरजरूरी हो गई और माँ के इत्मीनान के लिए एक प्रसिद्ध मुनि ने उससे परदेस में औरत, शराब और मांस को न छूने की प्रतिज्ञा करवा ली ।

लेकिन एक नई बाधा ठीक उस समय आ खड़ी हुई, जब वह समुद्र यात्रा पर रवाना हो ही रहा था। उसकी जाति के बड़े बूढ़ों ने पंचायत करके उससे साफ शब्दों में कह दिया, इंग्लैण्ड जाना हिन्दू धर्म के खिलाफ है, इस पर वह युवक, जो कॉलेज के विदाई समारोह में धन्यवाद् के दो शब्द भी ठीक ढ़ंग से बोल नहीं सका था, अपनी जाति के बड़ी बड़ी दाढ़ियों वाले खुर्राट नेताओं के चढ़े तेवरों का मुकाबला करने के लिए डट गया। इस युवक की बेअदबी से नाराज होकर पंचों ने उसे जाति से बहिष्कृत करने का फतवा दे डाला, लेकिन उनके इस हुक्म के अमल में आने से पहले ही वह युवक बम्बई से विदेश के लिए रवाना हो गया।

देहाती वातावरण से एकदम जहाज का सार्वदेशिक वातावरण उसके लिए बड़ा भारी परिवर्तन था। पश्चिमी ढंग के भोजन, यूरोपीय वेशभूषा और रीति रिवाजों में अपने आपको ढालना उसके लिए बड़ा ही कष्टदायी काम था। साथ के यात्री बोलते पुकारते तो उसे कॉलेज में जो अंग्रेजी सीखी थी वह यहाँ काम नहीं आती थी । जब बोलने के लिए मुँह खोलता तो अज्ञान का विचार उसके मन को बुरी तरह कचोटने लगता था ।

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER
STENOGRAPHER EXAM 2011
HINDI STENOGRAPHY PAPER (SESSION – 4)

जहाँ कोई समाज रहता—पलता है, वहाँ उसके साथ कुछ समस्याएँ भी होती हैं। यदि सामाजिक समस्याएँ न हों तो समाज के विकास में कोई अड़चन आ नहीं सकती। हमारा भारतीय समाज भी आज अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है।

समाज की पहली समस्या अन्धविश्वास तथा अज्ञान की है जो बहुत वर्ष बीत जाने के पश्चात् भी आज पूरी तरह से मिट नहीं पाई है। गाँवों के अधिकतर लोग आज भी झाड़—फूँक, टोने—टोटकों और सपानों के चक्कर में फँसे रहते हैं। किसी कार्य को जाते समय जब बिल्ली रास्ता काट जाती है तो लोग बडा अपशकुन मानते हैं। यदि कोई आदमी छींक देता है, कोई पीछे से टोक देता है या पानी का भरा लोटा हाथ से गिर जाता है तो लोग समझते हैं कि यह बुरा हुआ है इसलिए कार्य पूरा नहीं हो पाएगा।

दहेज की समस्या भी भारतीय समाज में आज मुँह फैलाए खड़ी है। दहेज के लोभी व्यक्ति रूपये पाने के लिए नव—वधुओं पर बड़े जुल्मोसितम ढहाते हैं। सास, ससुर तथा पति आदि मिलकर बहुओं को जिन्दा जला डालते हैं या गला घोंटकर मार डालते हैं। दहेज प्रथा भारतीय समाज के ऊपर एक कोढ़ की तरह है जो हमारे समाज को कुरूप करता जा रहा है। वधू—पक्ष के लोग जब वर—पक्ष के लोगों की दहेज की इच्छा पूरी नहीं कर पाते तो बहू का जीवन नर्क की तरह कष्टमय हो जाता है ।

अनेक समाज सुधारक दहेज प्रथा के विरोध में सार्वजनिक स्थानों पर तो अनेक भाषण देते हैं लेकिन जब वे अपने पुत्रों की शादी करते हैं तो दहेज लेने से जरा भी नहीं चूकते।

भारत की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या तो नारियों के उचित विकास की है। वैसे तो हमारे समाज में नारी के सम्बन्ध में कहा गया है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता लोग निवास करते हैं । लेकिन भारतीय समाज में आज नारी के ऊपर भाँति—भाँति के अत्याचार किए जा रहे हैं। आज भी पुरूषों का अह्म नारी को अपने पैरों तले दबा देना चाहता है। वह नारी की अहमियत अपने से बढ़कर मानने को तैयार नहीं है। पर्दा—प्रथा, अनमेल विवाह, बाल विवाह की स्वीकृति, विधवा विवाह निषेध, रूढ़िवाद, बहुविवाह की परम्पराओं के चलने से नारी की स्थिति दयनीय हो गई है। कर्त्तव्यशीलता के नाम पर आज नारियों को जिन्दा ही बलि पर चढ़ाया जा रहा है।

आर्थिक परतन्त्रता के कारण नारी आज घर की चारदीवारी में कैद होकर रह गई है। मुस्लिम समाज की नारियों की और भी बुरी दशा है। इस समाज के कानून में पुरूष को एक से अधिक विवाह करने की आज्ञा है जिस कारण मुस्लिम महिलाएँ जिन्दगी भर अपनी सौत की ईर्ष्या का शिकार होती रहती हैं।

भ्रष्टाचार के रोग ने तो भारतीय समाज की कमर तोड़कर रख दी है। सरकारी दफ्तरों के बाबू बिना रिश्वत लिये कोई काम करना नहीं चाहतें ट्यूशन का धन्धा शिक्षकों के व्यवसाय का एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है।

समाज में कुव्यवसनों और बुरे नशों की समस्या भी सरकार के लिए सिर दर्द बन गई है। लोग शराब , बीड़ी, सिगरेट, अफीम, स्मैक, चरस, गाँजा, हेरोइन आदि नशीले पदार्थों के चक्कर में अपने तनमन की अमूल्य शक्ति तथा ढेर सारा रूपया–पैसा खर्च कर डालते हैं। ये चीजें समाज के लोगों को अन्दर से खोखला बना डालती हैं।

भारतीय समाज में एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति, संवेदनशीलता तथा सहयोग की प्रवृतियाँ काफी कुछ घट गई हैं। समाज में जब किसी पर अत्याचार होता है तो शेष लोग मूक–दर्शक बने अत्याचार को साक्षी होकर देखते रहते हैं लेकिन पीड़ित या दुःखी व्यक्ति की सहायता के लिए कुछ नहीं कर पाते।

शहर में कोई गुण्डा बदमाश व्यक्ति किसी अच्छे आदमी को पीटता है, किसी की हत्या करता है, नारी के आभूषण छीनता है और जेबकतरा दिनदहाड़े किसी की जेब काटता है तो समाज ऐसे दृश्यों को देखते हुए भी अनदेखा बन जाता है। आज का समाज इतना स्वार्थी हो गया है कि अपने लाभ के लिए किसी को भी हानि पहुँचा सकता है।

दिनदहाड़े लोग बैंकों को लूट लेते हैं, रास्ते चलते लोगों को लूट लेते हैं, रेल, बस और कारों को लूट लेते हैं–फिर भी समाज किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना देखता रहता है।

अदालतों में झूठी गवाही और रिश्वत के बल पर बड़े–बड़े अपराधियों को छुड़ा लिया जाता है तथा झूठे मुकदमें गढ़कर सीधे–सादे व्यक्तियों को जेल में ठूँस दिया जाता है। यह समाज की विकृति या दोष नही तो और क्या है?

यद्यपि सरकार के प्रयासों से अनेक लोगों तक शिक्षा की रोशनी पहुँची है लेकिन आज भी भारत के अनेक व्यक्ति अशिक्षा के गहन अन्धकार में जीवन जी रहे हैं जीवन जी रहे हैं।पढ़े–लिखे चालाक लोग उनके साथ धोखा करके उनके जीवन को लूट रहे हैं।

भारतीय समाज की एक बड़ी समस्या युवकों में बेरोजगारी की है। अनेक पढ़े–लिखे लोग बेरोजगार बैठे हैं। छोटा–मोटा काम–धन्धा वे करना नहीं चाहते और बड़ी सरकारी नौकरी के उनको दर्शन हो नहीं रहे हैं।

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER
STENOGRAPHER EXAM 2011
HINDI STENOGRAPHY PAPER (SESSION – 5)

कर्त्तव्य और साधारण कर्मों में बहुत अन्तर है। हम लोग रोजाना सोने–जागने,उठने–बैठने, चलने–फिरने तथा दिनचर्या के कार्यों से निवृत्त होने के लिए जो कर्म करते हैं,वे साधारण कर्मों की श्रेणी में आते हैं। ऐसे कर्मों को कर्त्तव्य नहीं कहा जा सकता।

कर्त्तव्य के अन्दर अपने साथ अपने घर परिवार या समाज के अनेक लोगों का हित समाया हुआ होता है। मनुष्य कर्त्तव्य को एक धर्म समझकर, जीवन का लक्ष्य समझकर बड़ी तत्परता और लगनपूर्वक करता है। जिस व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य का बोध हो जाता है वह कर्त्तव्य पालन करने में कभी आलस्य नहीं करता।

बच्चों का लालन–पालन अथवा परवरिश करना माता–पिता का कर्त्तव्य है। वे अपने कर्त्तव्य में जरा–सी भी लापरवाही नहीं बरतना चाहते। यदि बच्चे को कोई कष्ट होता है तो माँ परेशान हो उठती है। वह खुद गीली जमीन पर सोकर अपने बच्चे को सूखी धरती पर और बिछौने पर सुलाती है, खुद भूखी रहकर बच्चों को दूध अवश्य पिलाती है। यह सिर्फ माँ की ममता नहीं, माँ का अपने बच्चे के प्रति कर्त्तव्य–पालन है।

कर्त्तव्य–पालन स्नेह ममता और सभी प्रकार के स्वार्थों से ऊपर उठा हुआ होता है। एक पुलिस इंस्पेक्टर का छोटा भाई, यदि चोरी करता है, किसी महिला के साथ बलात्कार करता है तो अपने भाई को पकड़कर हवालात में बन्द कर देना उस पुलिस अधिकारी का कर्त्तव्य है।

कर्त्तव्य के कई पहलू हैं। वह स्वार्थ या पक्षपात नहीं देखता। कर्त्तव्य की आँखें सच्चाई और न्याय से भरी हुई होती हैं। कर्त्तव्य परायण व्यक्ति की नजर में अमीर–गरीब, अपने–पराए, ऊँच–नीच आदि सब समान है।

कर्त्तव्य विधि, विधाता और समाज का बनाया हुआ एक कानून है, संविधान है। प्रत्येक मनुष्य जब पृथ्वी पर जन्म लेता है और समझदारी की आँखें खोलने लगता है तो उसके सामने कोई–न–कोई कर्त्तव्य अवश्य होता है।

अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करना बालक का कर्त्तव्य है, अपने शिक्षकगणों अथवा गुरूजनों का कहना मानना प्रत्येक विद्यार्थी का कर्त्तव्य है। एक पति का फर्ज अपनी पत्नी को सदैव विश्वास में बनाए रखना, हर प्रकार से उसके दुःख दर्द और सुख में सहयोगी भी बनना है जबकि पत्नी का फर्ज अपने पति की सेवा सुश्रूषा करना है।

यद्यपि सभी वर्ग के व्यक्तियों को अपना–अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए अधिकार मिले हुए हैं लेकिन आज के समय में सभी अपने कर्त्तव्यों का दायित्व भली प्रकार से नहीं निर्वाह कर रहे हैं। हमारे दशे में आज भी कई बच्चे ऐसे हैं जो अपने माता–पिता की बातों को ठुकराते हैं और अपने शिक्षकगणों से तर्क–कुतर्क किया करते हैं । इसी देश में दहेज के लोभी सास ससुर अपनी बहू को जिन्दा जला देते हैं और पति उनके इस दुष्कर्म में सहयोगी बनते हैं । अनेक स्त्रियाँ अपने पति की आँखें बचाकर किसी पराए पुरूष के साथ प्रेमालाप और अपने पति से धोखा करती है।

पुलिस के भ्रष्ट अधिकारी जरा–सी रिश्वत या सिफारिश को पाकर दोषी व्यक्ति को मुक्ति दिला देते हैं। राजनेता जनता का प्रतिनिधि तथा जनता का सेवक हुआ करता है। राजनीति की कुर्सी पाने के लिए नेता लोग देश की भोली–भाली जनता को कितना लुभाते हैं, उनसे तरह–तरह के वायदे करते हैं, आश्वासन देते हैं। लेकिन चुनावों में जीत जाने के बाद उनके दर्शन ही दुर्लभ हो जाते हैं।

हमारे देश की यह बड़ी विडम्बना है कि यहाँ राम जैसे सदाचारी और सज्जन पुरूष भी पैदा होते हैं – तो रावण जैसे कपटी और दुराचारी लोग भी पैदा होते हैं। कभी–कभी तो यह पहचानना ही मुश्किल हो जाता है कि इस देश में कौन राम है और कौन रावण। केवल उनके कर्त्तव्य–कर्मों से उनके आचरण और प्रवृत्तियों को पहचाना जा सकता है।

कर्त्तव्य मनुष्य के चरित्र का दर्पण है। जिसका जैसा चरित्र या स्वभाव होता है, वह वैसा ही कर्म करता है। कर्त्तव्य–पालन से मनुष्य के मन को अपूर्व शान्ति मिलती है, आत्मा को सुख–सन्तोष का अनुभव होता है। कर्त्तव्य ही तो जीवन की उन्नति और प्रगति का साधन है ।

कर्त्तव्य–परायण व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को परमधर्म समझकर सदैव उसी में लगा रहता है।

कर्त्तव्य के सम्बन्ध में विद्वान विचारकों का मत है कि मानव की सेवा करना मानव का प्रथम कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसको नाप–जोखकर देखा जाए। जो काम अभेद भावना की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्त्तव्य करणीय है। ईश्वर शान्ति चाहता है और ईश्वर की इच्छा के अनुसार चलना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। वैर लेना या करना मनुष्य का कर्त्तव्य नहीं है । उसका कर्त्तव्य क्षमा है । जो कार्य आपके सामने है, उसे शीघ्रता से निष्कपट भावना से करना ही कर्त्तव्य है। यही आज के अधिकार की पूर्ति है।

प्यासे को पानी पिलाना तथा भूखे को रोटी खिलाना, निर्धन व्यक्ति की धन से सहायता करना, निराश्रित को आश्रय प्रदान करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही मनुष्य का धर्म है और यही मानवता कहलाती है।